Dr. Madan Paswan
History Department. Continue

विशेषताएँ हैं। ऋग्वेद में इनका उल्लेख नहीं मिलता है। आगे इसका उल्लेख होगा कि प्रारम्भिक वैदिक लोग कृषि के साथ पशुपालन पर निर्भर थे और ईंटों का उपयोग नहीं करते थे। शुरूआती वैदिक लोगों ने लगभग पूरे हड़प्पा क्षेत्र पर कब्जा कर लिया लेकिन वे अफगानिस्तान में भी रहते थे।

हड़प्पन लेखन, जिसे सिन्धु लिपि कहा जाता है, अब तक नहीं पढ़ी जा सकी है लेकिन वैदिक समय का कोई भी इण्डो-आर्यन अभिलेख भारत में नहीं मिला है। हड़प्पा की भाषाओं के बारे में हमारा कोई स्पष्ट अनुमान नहीं है, हालाँकि वैदिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली इण्डो-आर्यन भाषा के विभिन्न रूप दक्षिण एशिया में हैं।

हड़प्पाकालीन प्रशासन संबंधी इतिहासकारों का मतः -

1. मध्यमार्गी जनतंत्र : कारवा दिमा - व्हीलर.
2. जनतंत्रात्मक शासन : हण्टर.
3. प्रतिनिधि शासन : मैके.
4. गुलामों पर आधारित शासन : वी० वी० स्त्रुवे.
5. पुरोहितों का शासन : स्टुअर्ट पिगॉट.
6. व्यापारियों का शासन : लैम्बिक विचार।

सिन्धु काल में विदेशी व्यापार

आयातित वस्तुएँ	स्थल (प्रदेश)
1. सोना -	अफगानिस्तान, ईरान, दक्षिण भारत (कोलार),
2. ताँबा -	खेतरी (राजस्थान), बलूचिस्तान (पाकिस्तान).
3. टिन -	अफगानिस्तान, ईरान.
4. अलबास्टर (अर्द्ध कीमती पत्थर) -	बलूचिस्तान, राजस्थान.
5. फिरोजा -	ईरान.
6. चाँदी -	अफगानिस्तान, ईरान, मेसोपोटामिया.
7. लाजवर्द -	बदक्शां.
8. सीसा -	ईरान, अफगानिस्तान, राजस्थान, दक्षिण भारत.
9. गोमेद -	सौराष्ट्र.
10. स्टीयटाइट -	तेपी याहया (ईरान).
11. डामर बिटुमिन -	बलूचिस्तान और मेसोपोटामिया.
12. देवदार शिलाजीत -	हिमालय (भारत) क्षेत्र।

Continue.......

Continue

हड़प्पा संस्कृति का अन्य संस्कृतियों से संपर्क :—

हड़प्पावासियों का भारतीय प्रदेशों के अतिरिक्त विश्व के कई अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंध थे। अफगानिस्तान के शोर्तुगई नामक स्थान से सैंधव सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। अफगानिस्तान, आर्मिनिया तथा ईरान से वे लाजवर्द मणि तथा चाँदी प्राप्त करते थे। मेसोपोटामिया के साथ व्यापार, स्थल तथा जल दोनों ही मार्गों से होता था। सुमेरियन लेखों में व्यापार के संबंध में — 'दिलमुन', 'मगन' तथा 'मेलूहा' का उल्लेख मिलता है। इसमें 'मेलूहा' का समीकरण सिंध प्रदेश से किया गया है। पता चलता है कि यहाँ से उर के व्यापारी हाथी दांत, इमारती लकड़ी, ताँबा, सोना, मनके, आभूषण, मोती, अंजन आदि प्राप्त करते थे। मेसोपोटामिया के प्रवेश के लिए प्रमुख बन्दरगाह 'उर' ही था। उल्लेखनीय है कि हड़प्पाकालीन मुहर मेसोपोटामिया के सूसा और उर में मिले हैं। हाल ही में फारस की खाड़ी में फैलका और बहरीन मेसोपोटामिया के मिश्रुर में सिन्धु सभ्यता की मुहरें पाई गई हैं जो चौकोर हैं, जिनपर सींगवाले पशु की आकृति एवं सिंधु लिपि उत्कीर्ण है। मध्य एशिया के तुर्कमेनिस्तान नामक जगह से भी सिन्धु सभ्यता की कुछ वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।

Continue.....

—Dr. Madan Paswan
Assistant Professor, Dept. of History,
D.B. College, Jaynagar, Madhubani,
WhatsApp no.: 9709493720.
Email id. :- drpmadanhst@gmail.com